नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद प्रायोजित, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा

हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

मीडिया-आध्यात्म एक दर्शन का विषय है - प्रो. विजय धारूरकर

वर्धा, दि.29 जुलाई 2015: मीडिया आध्यात्म एक दर्शन का विषय है। अपने भीतर नैतिकता का डर हो तो काम अच्छे होते है। मीडिया के विषय में मूल्य संकट को दूर करने के लिए हमें उच्चमत गुणवत्ता के मानक स्थापित करने होंगे और गुणवत्ता को ही सामाजिक जिम्मेदारी समझना चाहिए। मीडिया की पहुंच अभी भी गांव-देहात, किसान और श्रमिकों से दूर है। हमें चाहिए कि उन तक पहुंच बनाने के लिए उनकी समस्याओं को उजागर करें। उक्त विचार जाने-माने मीडियाविद तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष प्रो. विजय धारूरकर ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के "संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा 'आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव'" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन बुधवार को 'मीडिया संस्कृति और बाजार' विषय पर अध्यक्षीय उदबोधन दे रहे थे। इस अवसर पर मंच पर मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मो. फरियाद, वरिष्ठ पत्रकार श्याम कश्यप, मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पूर्व निदेशक प्रो. राम मोहन पाठक, डॉ. भीमराव अंबेडकर आगरा विश्वविद्यालय, आगरा के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ. गिरीजा शंकर शर्मा, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पत्रकारिता विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अर्जुन तिवारी, दूरदर्शन के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक प्रभु झींगरन, मूल्यानुगत मीडिया के संपादक एवं शिक्षाविद प्रो. कमल दीक्षित, इंक मीडिया इंस्टीटयूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन, सागर के निदेशक आशीष द्विवेदी मंचासीन थे।

संगोष्ठी में दूसरे दिन 'मीडिया, संस्कृति और बाजार' तथा 'आध्यात्मिकता और मीडिया' इन विषयों पर संयुक्त सत्र में वक्ताओं ने विमर्श किया।

डॉ. धारूरकर ने स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी आदि की पत्रकारिता का उल्लेख करते हुए कहा कि इनकी पत्रकारिता के केंद्र में आध्यात्म था और उनके समाचार पत्रों में मूल्यों ताकत थी। उन्होंने गांधी जी की पुस्तक हिंद स्वराज का हवाला देते हुए कहा कि इस पुस्तक से कई दर्शन का निर्माण हुआ है। भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के वक्तव्य

को अधोरेखित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के कोने-कोने में जाकर वहां के छोटे बच्चों और विद्यार्थियों से मिले जो आने वाले उज्ज्वल भविष्य के निर्माता है।

आशीष द्विवेदी ने कार्टूनों पर केंद्रित अपने वक्तव्य में कहा कि कार्टूनों में स्वायत्तता, स्वतंत्रता और स्वच्छंदता होनी चाहिए। उन्होंन चार्ली हेब्दो, एम. एफ. हुसेन और असीम त्रिवेदी आदि के उदाहरण अपने वक्तव्य में दिए। डॉ. गिरीजा शंकर शर्मा ने कहा कि गांधी जी और डॉ. आंबेडकर ने आजादी से पहले पत्रकारिता की और अखबार भी निकाले, वे बाजार के आगे नहीं झुके। यही बात जवाहर लाल नेहरू पर भी लागू होती है उन्होंने भी बाजार के दबाव को नहीं स्विकारा। मो. फरियाद ने कहा कि वर्तमान समय में बाजार संस्कृति पर हावी हुआ है और मीडिया भी बाजार की चपेट में आ गया है। हमारे घर और परिवार तथा त्योहारों में भी पश्चिमी संस्कृति का वर्चस्व बढ़ गया है। प्रभु झींगरन ने सोशल मीडिया के वर्चस्व की बात कही। प्रो. राम मोहन पाठक ने संस्कृति जड़ नहीं है वह बदलाव चाहती, यह परंपरा चलती रहती है, इसे मानव मन चला रहा है। मानव मन ही संस्कृति को प्रवाहीत और नियंत्रित करता है। प्रो. श्याम कश्यप ने कहा कि संस्कृति से परंपरा का निर्माण होता है।

उन्होंने कहा कि बाजार की भाषा बोलचाल की भाषा है जिसे टकसाली भाषा कहते है। डॉ. अर्जुन तिवारी ने कहा कि लोकमान्य तिलक में मीडिया और समाज परिवर्तन के गुण थे और उनकी पुस्तक गीता रहस्य में मीडिया और सामाजिक बदलाव दोनों की उपस्थिति दिखायी पडती है। उन्होंने पत्रकार को न्यायाधिश की संज्ञा देते हुए कहा कि दोनों पक्षों की बात सुनकर लिखने वाला ही पत्रकार कहलाता है। प्रो. कमल दीक्षित ने आध्यात्मिकता और मीडिया सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि बुद्धिजीवियों के विचार जब लोगों तक पहुंचते है तभी असली संस्कृति बनती है।

मंचासीन अतिथियों का स्वागत संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय तथा डॉ. अख्तर आलम ने किया। सत्र का संचालन संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर राजेश लेहकपुरे ने किया तथा आभार ज्ञापन सहायक प्रोफेसर डॉ. अख्तर आलम ने किया। इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि, शोधार्थी एवं प्रतिभागी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।